Vol 5 Issue 10 April 2016 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 3.4052(UIF) Volume - 5 | Issue - 10 | April - 2016

Golden Research Thoughts

GRT

''कवि नागार्जुन का काव्य सौष्ठव''

प्रा. शिंदे अच्युत साधू
हिंदी विभाग प्रमुख ,मु.सा. काकडे महाविद्यालय, सोमेश्वरनगर.

प्रास्ताविक

आधुनिक हिंदी कविता के प्रमुख हस्ताक्षरों में कवि बैद्यनाथ मिश्र 'नागार्जुन' एक बहुमुखी प्रतिभा के कलाकार है। हिंदी और मैथिली भाषा के अप्रतीम कवि नागार्जुन है।कवि बैधनाथ मिश्र नागार्जुन तथा मैथिली में 'यात्री' उपनाम से विशेष प्रसिद्ध है। कवि नागार्जुन का जन्म जून 1911 में गॉव तरउनी, जि. दरभंगा बिहार में हुआ। मातृभाषा मैथिली का प्रभाव तथा बिहार की मिटटी की गंध आपकी कविता का मूल भाव है। आपकी कविता में जनमानस की, जनजीवन की व्याप्त समस्याओं के साथ व्यवस्था के प्रति आक्रोश तथा दुखी, पीडित, शोषक जनता के प्रति दयाभाव आपकी मूल विशेषता है।

ग्रामीण वातावरण से जुडने के कारण इनकी कविता में ग्रामांचल से संबंधित विविध प्रसंगों तथा समस्याओं का यथार्थ चित्रण, प्रकृति की मनोरम झॉकियॉ, जनजीवन की आशा–आकांशाएँ, सामाजिक चेतना, मजदूर वर्ग की संघर्षशील चेतना, सर्वहारा वर्ग की दशा का मार्मिक चित्रण आदि कवि नागार्जुन की कविता के विविध विषय है।

प्रगतिवादी चेतना से जुडे कवि नागार्जुन के काव्य की भावगत तथा कलागत कई विशेषताएँ हैं जिन्हें दो रूपों में बॉटकर निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है–

अ. भावगत या काव्यनुभूति ब. कलागत या काव्यभिव्यक्ति

अ. भावगत या काव्यानुभूतिः

कवि नागार्जुन ने एक ओर पूँजीवाद, नोकरशाही, अफसरशाही, शोषक वर्ग की मानसिकता तथा साम्राज्यवादी लोगों की विकृति को अत्यंत निकट से देखा है और अनुभवित किया है, तो दूसरी ओर सामान्य जनता की पीडा, दुख, दर्द, अहसास, सर्वहारा वर्ग की दशा, पीडित जनता का आक्रोश इन सबको उन्होंने कुछ हद तक भोगा भी है यही उनका भोगा हुआ यथार्थ उनकी कविता या भावगत विषय बन गया है।

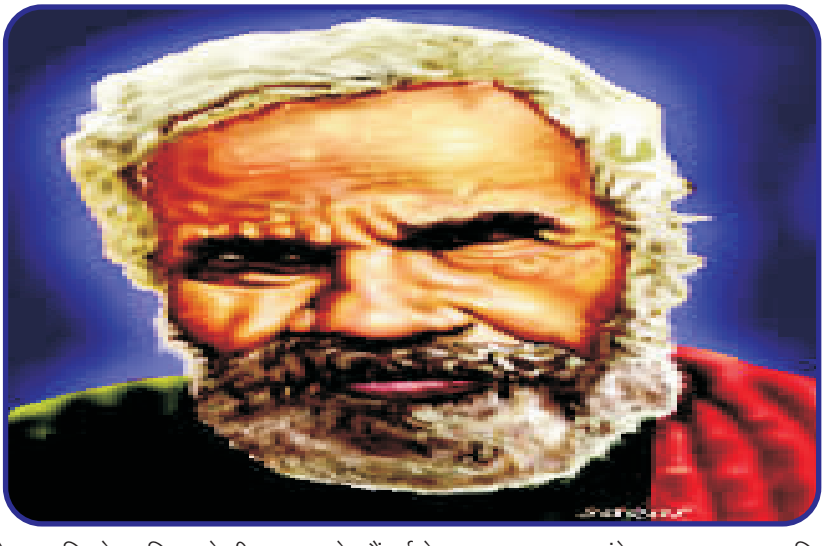

1. कवि नागार्जुन का प्राकृतिक भावः–

कविता अपनी विकास यात्रा में आदि काल से लेकर आजतक प्रकृति से प्रेरणा लेती दिखाई देती है। प्रकृति के सानिध्य से ही मनुष्य को सौंदर्यबोध, प्रणय भावना, संवेदना, भावुकता आदि की प्राप्ति हुई है। कवि नागार्जुन भी इससे अछूते नहीं है। जिनका बचपन ही प्रकृति की गोद में पला बढा है ऐसे कवि प्रकृति के विविध रूपों से अनभिज्ञ कैसे रह सकता है– इनकी कविता में प्रकृति का व्यापक रूप से चित्रण प्राप्त होता है– 'वह मेरी भी आशा है' कविता में नागार्जुन ने प्रकृति का बडा ही मनोहारी रूप में चित्रित किया है।

''भीनी–भीनी खुशबूवाले रंग–बिरंगे
यह जो इतने फूल खिलते हैं
कल इनको मेरे प्राणों ने बहलाया था।
कल इनको मेरे सपनों ने सहलाया था।
पकी सुनहरी फसलों से जो

अबकी यह खलिहान भर गया
मेरी रगरग के शोणित की
बूँदे इसमें मुस्काती है।

(नागार्जुन की चुनी हुई रचनाएँ, मेरी आभा)

2. आम जनता का जनकविः–

कवि नागार्जुन की कविता आम जनता की कविता है। देश की गरीबी, भूखमरी, अभाव, अकाल, बाढ, राजनैतिक भ्रष्टाचार, आदि कई विषयों पर कवि नागार्जुन जनकवि के रूप में लिखते हुए दिखाई देते हैं, अकाल और उसके बाद, जैसी कविता आमजनता का वास्तविक चित्रण करती है, ऐसे अनेक प्रसंग है समस्या है, जिनके प्रति कवि नागार्जुन सजगभाव से जनता के साथ जुडे हुए है तभी तो वे लिखते हैं–

मैं तुम्हारे लिए ही जियूँगा मरूँगा
मैं तुम्हरे इर्द गिर्द रहना चाहॅगा
मैं तुम्हारे ही प्रति अपनी वफादारी निभाउॅगा।

3. देश की वास्तविक स्थिति का यथार्थ चित्रणः–

इनकी कविताओं में देश की वास्तविक स्थितियों का यथार्थ चित्रण प्राप्त होता है।समसामईक घटना, सरकार की भ्रष्ट योजनाएँ, गांधी के नाम पर वोट मांगनेवाले राजनेता, वर्गभेद, सर्वहारा वर्ग की दशा आदि विषयों पर कवि नागार्जुन अपनी भावभावनाओं को बडी मार्मिकता के साथ व्यक्त करते है। यहॉ तक इस देश में चापुलुसों की दुनिया का पर्दाफाश करते हुए सामाजिक व्यवस्था के प्रति आक्रोश व्यक्त करते हुए लिखते हैं–

''सपने में भी सत्य न बोलो वर्ना पकडे जाओंगे
भइया लखनऊ दिल्ली पहुॅचों मेवा मिठाई पाओगे
माल मिलेगा रेत सको यदि गला किसान मजदूरों का
हम मरभुक्खो से क्या होगा चरण गहों श्रीमानों का।''

4. सामाजिक यथार्थ का मार्मिक अंकनः–

कवि नागार्जुन अपने काव्य में सामाजिक यथार्थ का मार्मिक अंकन करते हैं। सामान्य जनता तथा शोषक वर्ग आज किस प्रकार चक्की में पीस रहा है, किस तरह भारत का किसान विविध प्रकार की कठिनाइयों से जूझ रहा है, किस तरह यहॉ का मजदूर शोषण का शिकार बन रहा है, किस तरह मध्यम वर्ग विविध समस्याओं में उलझकर व्यग्र एवं बेचेन बना रहता है, किस तरह निम्नवर्ग श्रमरत होकर भी भरपेट भोजन प्राप्त नहीं कर पाता है और पग पग पर ठुकराया जाता है एवं किस प्रकार उच्चवर्ग वैभव एवं विलास के पालने में झूलता हुआ ऐशोराम का जीवन बिता रहा है,दूसरों की कमाई खा रहा है, कम काम और अधिक आराम में लीन है। और जनता को पीड़ा, कष्टएवं व्यथा देने में ही आनंद का अनुभव करता है। इसी का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं कि,

जमींदार है, साहूकार है, बनिया है, व्यापारी है,
अंदर अंदर बिकट कसाई बाहर खद्धारी है।
सब घुस आए भरा पड़ा है, भारत माता का मंदिर।
एक बार जो फिसले अगुआ फिसल रहे हैं फिर फिर फिर।

इतना ही नहीं इसी वैषम्य से दुखी होकर और अभावों से उबकर कवि मजदूर राज्य स्थापित करने के लिए जनता को अह्वान करता है, जिससे वर्ग संघर्ष समाप्त हो जाएगा, किसान मजदूर भी जमीन के मालिक बन जाएगे तथा अभाव और बेकारी का सफाया हो जाएगा। इस तरह कवि ने मजदूर, किसान, शिक्षक, व्यापारी, नेता, कवि, सेठ, जमींदार आदि सभी पर तीक्ष्ण दृष्टि डालते हुए समाज के यथार्थ जीवन का जीता जागता चित्र अंकित किया है, और सामाजिक विषमता, असमानता, अभाव, बेकारी, यातना, कष्ट, पीड़ा, वेदना आदि का चित्रण करते हुए सच्चे जन कवि की भूमिका निभाने का प्रयास किया है।

4. देश के प्रति प्रगाढ निष्ठा एवं देश प्रेमः–

कवि नागार्जुन अपनी कविताओं के माध्यम से देश के प्रति व्यापक प्रेम की भावना का चित्रण करते है। अपने देश, अपने समाज, अपने राष्ट्र, अपने देशवासी, अपने नदी, वन, पर्वत, राष्ट्र खेत–खलियान, गॉव, नगर तथा अपने सभी प्राणियों एवं सभी पदार्थों से गहरा अनुराग है। वह अपनी मातृभूमि का अनन्य पुजारी है, अपने राष्ट्र का अनन्य भक्त है और अपनी जनता का अनन्य सेवक है। इसलिए वह पुकार उठता है–

खेत हमारे, भूमि हमारी, सारा देश हमारा है,
इसलिए तो हमको इसका चप्पा चप्पा प्यारा है।

अपनी मातृभूमि के चप्पे चप्पे से प्याार करने वाला यह कवि इसलिए शस्यश्यामला के प्रति असीम प्रेम अटूट श्रद्धा एवं अनुपम अनुराग व्यक्त करता हुआ यहॉ तक कहता है....

''देवि, तुम्हारी वसुंधरा का वित्त वित्त रत्नाकार है।''

इतना ही नहीं, जब चीनी आक्रमणकारियों ने भारत की पुणित वसुंधरा को हडपने के लिए अपने फौलादी हाथ उठाने शुरू किए, तब

स्वदेश प्रेम में डुबा हुआ कवि पुकार उठा है–इतना ही नहीं उस दुर्दांत दमन चक्र चलाने वाले 'माओ' को गालियॉ देता है।
इन सभी विशेषताओं के अतिरिक्त कवि नागार्जुन की कविता में नारी विषयक आदर की भावना, ममत्व की भावना, गॉव के प्रति प्रेम, व्यापक संवेदना आदि कई विशेषताओं को कविता के माध्यम से व्यक्त किया है।

ब. कलापक्ष या काव्याभिव्यक्तिः–

कवि नागार्जुन ने अपनी कविता के लिए पंरपराओं को ताडकर अपनी काव्यनुभूतियों को ताडकर अपनी काव्यानुभूति के अनुरूप लिखा या शिल्प विधान बनाया है। आवश्यकता के अनुरूप उन्होंने परंपरा का निर्वाह भी किया है। जिसे इस प्रकार देखा जा सकता है।

1. भाषा एवं शब्द योजनाः–

कवि नागार्जुन ने अपनी अनुभूति को सशक्त भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। कवि नागार्जुन संस्कृत, पालि, पाकृत, अपभ्रंश, मैथिली तथा हिंदी भाषा के ज्ञाता थे। इसलिए कवि की काव्य भाषा पर इन सभी भाषाओं का प्रभाव परिलक्षित होता है। कही कही इनकी कविता बंगली भाषा का उदाहरण भी बन गई है।

घकचो खो कौन एइ जो गॉधी महात्मा।

तो कहीं कविता का शीर्षक अंगेजी भी बना दिखाई देता है। जैसे–'प्लीज एक्सक्यूज मी',। संस्कृत भाषा का प्रभाव उनकी कई कविताओं में दिखाई देता है– जैसे उनकी ''बादल को घिरते देखा है।''

कवि नागार्जुन की कविता में लाक्षणिकता भी बडी दर्शनीय है–

जैसे–1.गिरगिट के अंडे सेता हूँ, मैं देख रहा।

2. वतन बेचकर पंडित नेहरू फूले नहीं समाते हैं।

3. महलों की महॅगी बिजली से डरती संध्या डरता प्रभात आदि।

2. प्रतीक विधानः–

कवि नागार्जुन प्रकृति के साथ जुडे हुए कवि है, जनवादी कवि होने के कारण इनकी कविता में प्रतीकों का आना स्वाभाविक था। शायद इसी कारण उनकी कविता में प्रतीक एवं प्रतीकात्मक भाषा का सुंदर प्रयोग हुआ है–

पुराने कॉग्रेसवालों के लिए कवि नागार्जुन प्रतीक का प्रयोग करते हुए लिखते हैं–

''परसो था जंगल का राजा, कल था घायल बूढा शेर।''

चीनी के प्रति प्रतीकात्मक भाषा–

पीले बिलौटे ने मार दिया पंजा ऽऽ।
सर हुआ घायल लेनिन का गंजा ऽऽ।

इसके अतिरिक्त–''पी जाती है यह हलाहल चुपचाप''
''यातुधान की छलना'' आदि।

3. नागार्जुन की बिंब योजनाः–

कवि नागार्जुन बिंब विधान की दृष्टि से बडे सशक्त कवि माने जाते हैं। इनकी कविता में लगभग सभी प्रकार के बिंब विद्यामान है। दृश्य, श्रव्य, स्पृश्य, ध्रातव्य के साथ साथ अध्यात्मिक बिंब भी विद्यमान है। जैसे–

''झुकी पीठ को मिला
किसी हथेली का स्पर्श
तन गई रीढ।''

4. नागार्जुन का छंद विधानः–

कवि नागार्जुन की कविता में छंदोबद्धता तथा मुक्त छंद का प्रयोग भी प्राप्त होता है। कवि ने भावों के अनुकूल कविता को कही कही छेद से मुक्त बनाया है, तो कही कही उनकी कविता परमार से हटकर बिल्कुल मुक्तछंद में विचरण करती हुई दिखाई देती है।

निष्कर्षः

इस प्रकार कवि नागार्जुन की कविता का अध्ययन एवं अनुशीलन करने से यह ज्ञात होता है कि कवि ने अपनी जन्मभूमि से जुडी हुई अनुभूतियों को सशक्त भाषा के माध्यम से प्रतीकात्मक, लाक्षणिक, पदावली द्वारा अभिव्यक्त करने का मार्मिक प्रयास किया है।

संदर्भ ग्रंथः

1. हिंदी के प्रतिनिधि कवि–डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना, विनोद पुस्तक मंडल आग्रा
2. मुक्तिबोध एवं नागार्जुन का काव्य दर्शन–डॉ. प्रभा दीक्षित, साहित्य निलम, कानपूर 21, प्रथम् संस्करण 2003
3. आधुनिक हिंदी कविता–डॉ. हरदयाल, शब्दकार 159, गुरू अंगदनगर, दिल्ली 92, प्रथम् प्रकाशन, 1993
4. नई रचना और रचनाकार–डॉ. दयानंद शर्मा, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपूर, साकेतनगर 14 प्रथम 1990
5. छायावादी काव्य की प्रगतिशील चेतना– डॉ. संतोषकुमार तिवारी, भारतीय ग्रंथ निकेतन दरियागंज, नई दिल्ली 02, प्रथम संस्करण 1988

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org